A **(Printed Pages 3)**

Roll No. _____

A-181

बी.ए. (तृतीयवर्षम्) परीक्षा, 2015

प्रायोगिक संस्कृतम्

प्रथम प्रश्नपत्रम्

(वैदिक वाङ्मय धर्मशास्त्रञ्च)

समयावधिः - घण्टात्रयम् **पूर्णाङ्काः - 35**

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है।

प्रत्येक वर्ग से **एक** प्रश्न करना आवश्यक है।

1. अधोलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए -

(क) शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण कौन से हैं?

(ख) शुल्बसूत्र के प्रतिपाद्य विषय क्या हैं?

(ग) उपनिषदों की संख्या बताइए।

(घ) वर्ण की परिभाषा लिखिए।

(ड.) उपनिषद शब्द का अर्थ क्या है?

P.T.O.

(च) आपस्तम्ब ने अपने यज्ञ परिभाषा में वेद का क्या लक्षण दिया है?

(छ) सामवेद के दो प्रधान भाग लिखिए।

(ज) ऐतरेय ब्राह्मण में कुल कितने अध्याय है?

(झ) ईशावास्योपनिषद में कुल कितने मन्त्र हैं?

(ञ) धर्मसूत्र का परिचय प्रस्तुत कीजिए।

प्रथम वर्ग

2. ब्राह्मण ग्रन्थों के मुख्य प्रतिपाद्य विषय का विवेचन कीजिए।

3. सामवेद के प्रतिपाद्य विषय को प्रतिपादित कीजिए।

द्वितीय वर्ग

4. धर्मसूत्र की उपादेयता पर प्रकाश डालिए।

5. कल्पसूत्रों के महत्व को प्रतिपादित कीजिए।

तृतीय वर्ग

6. अधोलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए -

कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता ।
काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः ।।

7. अधोलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए :

वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च
न विप्रदुष्ट भावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित् ।।

चतुर्थ वर्ग

8. वर्ण व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

9. धर्मशास्त्र का वैशिष्टय लिखिए।